ज्ञान का बल हमारी बुद्धि को चमत्कारिक बनाता

मन का बोझ कभी आ जाये तो ज्ञान की प्रैक्टिस करो कि बाबा कह रहा है, उसकी आवाज़ आ रही है कानों में, मीठे बच्चे, मन के सारे बोझ मुझे दे दो, हल्के हो जाओ। मैं तुम्हारा साथी हूँ, तुम्हारे बोझ हरने आया हूँ। लाइफ को एन्जॉय करो। बाबा की आवाज़ मन में गूंजती रहे सारा दिन।

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि ज्ञान के द्वारा सबसे पहले हमें अपने विचारों को महान बनाना है। ऐसा न हो कि इच्छा तो हो फास्ट जाने की और विचार हों वही पुराने घिसे-पीटे। पास्ट से जो कुछ विचार लेकर आ रहे हैं वो ही कंटिन्यू हैं। उनमें परिवर्तन कुछ भी नहीं आया। क्योंकि विचार परिवर्तन ही तो जीवन परिवर्तन है। विचार बदल दो आपका जीवन बदल जायेगा। विचार बदल दो आपका संसार बदल जायेगा। अब आगे पढ़ेंगे...

एक व्यक्ति है माल लेकर सोचता है कि पेमेंट कर देंगे, फिर आगे बढ़के सोचता है कि छोड़ो उनके पास तो बहुत है। चलता है, सब दुनिया ऐसी ही है, एक ये स्थिति। इससे दूसरों को नहीं, दूसरों को तो परेशानी होगी लेकिन इसके जीवन में गिरावट बहुत आयेगी। आपका खाता बहुत भारी करने लगेगा मन को। दूसरा व्यक्ति सोचता है कि नहीं, मुझे बिल्कुल ऑनेस्टली सबका पेमेंट टाइम से पहले ही कर देना है। यही सफलता का सूत्र है। कभी नहीं कर पाता है तो क्षमा-याचना करता है कि मुझे एक हफ्ता और चाहिए। ये विचार है जो उसको सुख देगा। ऐसे जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न विचार मनुष्य की उन्नति का आधार है। मुरली बहुत ही सुन्दर चीज है। भगवान के महावाक्य, उसकी वाणी देखो उसके लिए ही लोग अनहद नाद सुनने की साधना करते हैं। कान बंद करते हैं, आँखें, मुँह, सब बंद करके सुनते हैं अनहद नाद भगवान का। वो अनहद नाद नहीं होता, वो तो नस-नाड़ियां अन्दर में चल रही होती हैं उनकी आवाज होती है। भगवान अब नाद कर रहे हैं, ज्ञान दे रहे हैं। शंख ध्वनि कर रहे हैं, अमृत बरसा रहे हैं। भीग जायें इस अमृत में। इस अमृत में जल के छींटों से अपने चित्त को शीतल कर दें। विकारों की अग्नि को शीतल कर दें, शांत कर दें। इसलिए बहुत ध्यान देंगे मुरली पर।

साथ में मुरली से दो या तीन बातें याद रखनी हैं सारे दिन के लिए। नहीं याद रहती तो लिख लो। जब क्लास से घर वापिस जाते हैं तो उसी बीच में इन बातों को तीन बार रिवाइज करके पक्का कर दो। और संकल्प कर दो जब भी खाना खायेंगे तो याद करेंगे, पानी पियेंगे याद करेंगे। अगर आप पानी बहुत पीते हैं तो जब भी पानी पियेंगे तो याद करेंगे तो क्या होगा वो वायब्रेशन पानी में जायेंगे। हमारा एक-एक संकल्प एनर्जी जनरेट करता है, एनर्जी पैदा करता है। आपके ब्रेन को एक सुन्दर एनर्जी मिलती रहेगी सारा दिन। और बाबा के बहुत सारे महावाक्य प्रैक्टिकल में आपको यूज करने हैं। उदाहरण के लिए जो बहुत वेलनॉन महावाक्य है बाबा का, बच्चे तुम निमित्त हो, कल्याणकारी मैं हूँ। तुम निमित्त बनकर कार्य करो। मैं तुम्हारा साथी हूँ। इसकी प्रैक्टिस करो। देखो कितना मजा आयेगा कर्मक्षेत्र पर। मन का बोझ कभी आ जाये तो ज्ञान की प्रैक्टिस करो कि बाबा कह रहा है, उसकी आवाज आ रही है कानों में, मीठे बच्चे, मन के सारे बोझ मुझे दे दो, हल्के हो जाओ। मैं तुम्हारा साथी हूँ, तुम्हारे बोझ हरने आया हूँ। लाइफ को एन्जॉय करो। बाबा की आवाज मन में गूंजती रहे सारा दिन। ये होगा ज्ञान का प्रैक्टिकल एप्लीकेशन। और ये बिल्कुल सरल है। ऐसी पाँच-सात बातें आप अपने पास रख लो। बच्चे ड्रामा का हर सीन कल्याणकारी है। ये हमें ज्ञान बताता है। तुम सृष्टि के आदि में देवता थे ये ज्ञान ने हमें रोशनी दी है। अब ये खेल पूरा हो रहा है, तुम्हें घर वापिस चलना है। ऐसी पाँच-सात बातें नोट कर लो अपने पास। उन्हें बीच-बीच में याद करते रहो। जब-जब बीच-बीच में ऐसी सिचुएशन आये उन्हें याद कर लिया। मन हल्का रहेगा। चित्त शांत होगा। स्वमान के अभ्यास से मन बहुत पॉवरफुल हो जायेगा। और हम आगे बढ़ते जायेंगे। हमारी श्रेष्ठ स्मृतियां, श्रेष्ठ स्वमान हमको निरंतर आगे बढ़ाता है, मदद करता है, साथ-साथ रोज थोड़ा-सा समय एकांत का अवश्य निकालें। और एकांत में ज्ञान को रिवाइज करें। कुछ अच्छी बातें लिखें, शिवबाबा के नाम पत्र लिख दें। मेरी ये इच्छायें हैं, मुझे यहाँ तक पहुंचना है, मार्ग में ये-ये बाधायें हैं आप मेरे साथी हो, बाधाओं को नष्ट कर दो। ऐसे बातें करो मजा आयेगा।

लेटर के माध्यम से बातें करो। तो इस तरह से ज्ञान का बल बढ़ता जायेगा और ये ज्ञान का बल हमें मायाजीत बनायेगा। ये ज्ञान का बल हमारी बुद्धि को चमत्कारिक करेगा। इस ज्ञान के बल से हम दूसरों की सहज ही सेवा कर सकेंगे। आगे जाने के लिए इस ज्ञान के चिंतन के द्वारा इसे अपना बल बना लो।

पुणे-महा.। सुप्रसिद्ध गायक पापोन से स्नेह मुलाकात कर ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके व मिस इंडिया ईशा अग्रवाल।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ शिव गिफ्ट भवन सेवाकेन्द्र पर आयोजित विशेष नशा मुक्ति अभियान का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. विमला दीदी, ब्र.कु. विक्रमा बहन, ब्र.कु. आरती, नशा मुक्ति केन्द्र के वकील माइकल एमाएलए, माँ नर्मदा आरती समिति के प्रमुख ओमकार दुबे तथा अन्य।

कोलो-म.प्र.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर आयोजित नशे को कहें 'ना' जीवन को कहें 'हाँ' कार्यक्रम के दौरान स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. रश्मि, ब्र.कु. अर्पिता, डॉ. अदिति धुर्वे,मुख्य खंड चिकित्सा अधिकारी, डॉ.आम बरोडिया,अस्पताल प्रबंधक, डॉ. दीपक पटेल,दंत चिकित्सक, डॉ. ए.एस. माहोर,नेत्र चिकित्सक, अनीता नेमा,उपाध्यक्ष नगर पालिका, ज्योति जैन,पार्षद, ठपेन्द्र काले,पूर्व मंडल अध्यक्ष तथा अन्य।

सतारा-नागठाणे(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सेना 22बटालियन महाराष्ट्र सतारा में 'मेडिटेशन तथा मनोबल' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. सुवर्णा, ब्र.कु. लक्ष्मी, कर्नल एमए राजमन्नार तथा अन्य।

ऊपर से नीचे

1. ब्राह्मण जीवन है ही सफलता ....। (3)
2. अनाज, अन्न, चावल। (2)
3. हर कर्म में स्वमान आपको सफलता सहज ही दिलायेगा। तो मन में निश्चयबुद्धि की निशानी है-सफलता या ....।(3)
4. बापदादा तो बच्चों को यही कहते कि बाप से भी आगे जा सकते हो क्योंकि यादगार में भी बाप की पूजा सिंगल है, आप बच्चों की पूजा डबल है। बापदादा के सिर के भी ___ हो। (2)
6. मधुबन में याद रहता है क्या, मैं दिल्ली की हूँ, मैं कर्नाटक की हूँ, मैं गुजरात की हूँ...। सब मधुबन .... है। तो एक ज़ाद हो गया ना।(3)
7. वह भी दिन आयेगा जो बड़े-बड़े महामण्डलेश्वर आपके चरणों में झुकेंगे। लेकिन ऐसे सम्मान बनना है। अच्छा है अवस्कुमारों की संख्या भी कम नहीं है, बहुत है। ब्राह्मण परिवार को .... है। (2)
10. अभिनय, रंगमंच, ड्रामा। (3)
11. ..... परमानेन्ट एड्रेस है। वह तो सेवा के लिए सेवाकेन्द्र में भेजा गया है। वह सेवा के स्थान है।(4)
12. ब्राह्मण ..... का फाउण्डेशन और सफलता का आधार-निश्चयबुद्धि।(3)
14. कार्य करो फरिश्ता बनकर कर्म करो, फरिश्ता अर्थात् डबल .....। कार्य का बोझ नहीं हो। कार्य का बोझ अलबेला फरिश्ता बनने नहीं देगा। तो बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप को मन की एकसमसाइज करो तो थकावट नहीं होगी। (3)
15. सफलता ब्राह्मण जीवन के गले का .... है। (2)
16. सफलता और समस्या दोनों प्रकार की बातें ड्रामा में आती हैं लेकिन समस्या के समय निश्चयबुद्धि की निशानी है-.... स्वरूप। (4)
18. शरीर, देह। (2)
19. वह तो सेवा के लिए सेवाकेन्द्र में भेजा गया है। वह सेवा के स्थान है, ___ आपका मधुबन है।(2)

अव्यक्त मुरली 14-11-2002 (पहेली-21)2024 -25

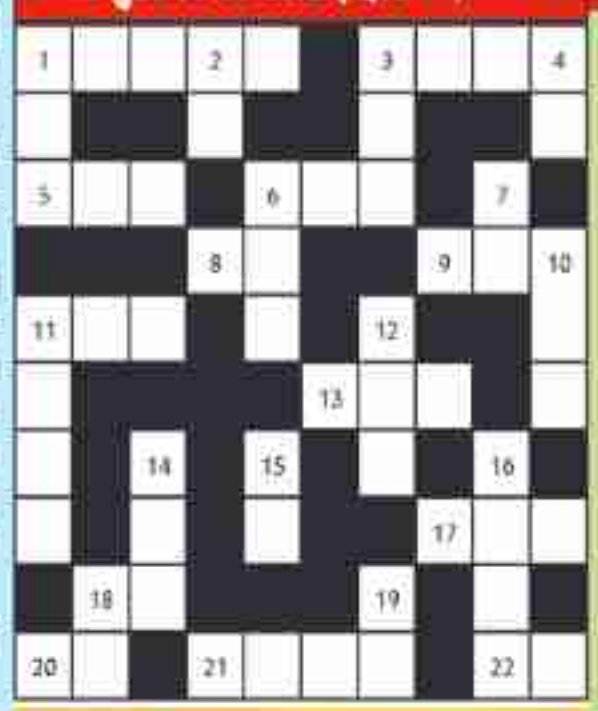

20/24 पहेली का उत्तर
(अव्यक्त मुरली 25-10-2002)

ऊपर से नीचे: 1.सहनशील, 2.युगल, 3.फरिश्ता, 4.कल्चर, 5.विधि, 7.विजयी, 9.जमा 10.चेहरा, 12.गले, 13-.परमधाम, 14.आत्मा, 15.महान, 16. स्वामी, 17. अविनाशी, 22. जॉब।

बायें से दायें: 1.सतयुग, 3.फलक, 6.रवि, 8.ताज, 11.लगन, 14.आसन, 18.परमात्मा, 19.विश्व, 20.प्लैन, 21.धारण, 23.काम, 24.मधुबन।

बायें से दायें

1. बापदादा बच्चों के स्वमान को देख सदा यही कहते वाह श्रेष्ठ ....., स्वराज्यधारी बच्चे वाह! हर एक बच्चे की विशेषता बाप को हर एक के मस्तक में चमकती हुई दिखाई देती है।(5)
3. हर एक बच्चे की ..... बाप को हर एक के मस्तक में चमकती हुई दिखाई देती है। आप भी अपनी ..... को जान, पहचान विश्व सेवा में लगाते चलो। (4)
5. अवस्कुमार प्रवृत्ति में रहते खेलेना करे कि दोनों साथ रहते भी स्वयं तक भी ..... रह सकते हैं। (3)
6. ब्राह्मण जीवन में सफल या सम्पूर्ण बनने के लिए मन में भी ..... आवश्यक है। (3)
8. जैसे बड़ा बाप को साकार रूप में देखा - डबल लाइट। ..... का भी बोझ नहीं। अलबेला फरिश्ता रूप। तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे।(2)
9. वैराग्य संस्कार को समय अनुकूल बन चलना, ___, यही सम्पूर्ण स्टेज है। चलना तो पड़ता ही है। परिवार को छोड़कर नहीं जायेंगे। (3)
11. माथा, शीश, ललाट। (3)
13. कुमार-कुमारियां ज्वाला रूप बन आत्माओं को .... बना देने वाले। कुमार और कुमारियों को तरस पड़ना चाहिए, आज के कुमार और कुमारियां पर, कितने भटक रहे हैं।(3)
17. आज समर्थ बाप आपसे चारों ओर के समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा समर्थ बन बाप ..... बनने का श्रेष्ठ पुरुषार्थ में लगे हुए हैं।(3)
18. किनारा, साहिल। (2)
20. बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ..... की एकसमसाइज करो तो थकावट नहीं होगी।(2)
21. जब बाप समान बनना है तो एक है निराकार और दूसरा है अलबेला फरिश्ता। तो जब भी समय मिलता है सेकण्ड में बाप समान निराकारी स्टेज पर स्थित हो जाओ। (4)
22. ..... भी है ना कि हमारा इतना बड़ा परिवार है। तो बड़े परिवार में बड़ी दिल से हर एक के संस्कार को जानते हुए चलना, निर्माण होके चलना, शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति में चलना...यही परिवार के निश्चयबुद्धि विजयी की निशानी है।(2)